

नव्यापितसहस्रकलर्षी २ उगतमयल्लधकल्लन्यताकयल्लह्वसंसाजनन
विपकूपं ॥ वरुपयमाशवगांधां वसंयुक्तं खल्लपचरपीयूषं
२ ऊंकायमनुपूष्यसम्बद्धवज्रसंस्थपितविपायकलर्षी ॥ घटमल्य
कयतप्रूपपरावक्राकृष्यमधुकिनीजलजुपं २ मटितिसाधयशदवताचक
हानसत्त्वमानीयद्वीजकलर्षी ॥ पाशादिश्राचमनदानपूष्यस्यं
मयसत्त्वप्रवक्षितविमलकलर्षी २ महागादवीर्यवाधिविह्वयं सम

जिनिनायन ११
नेनेवस १२

यसस्वस्वस्वस्वकीरुतं ॥ ६ ॥ यागगन्धयेवी ॥ जिनिनायनचक्रवृत्त
विहायाश्चक्रवृत्तमिष्टामधुलक्ष्मी ॥ ७ ॥ समहामकययियाईईनहि
चक्रमायाश्चक्रवृत्तमिष्टामधुलक्ष्मी ॥ ८ ॥ पञ्चयष्टपायप्रवृत्ताश्च
विष्णुमिष्टाप्रियमृत्वायप्रवृत्ति ॥ ९ ॥ वामदहिनकयष्टवायप्रवृत्ति ॥ १० ॥
हयिवजानलमृत्वायप्रवृत्ति ॥ ११ ॥ कर्षपावायप्रवृत्ति ॥ १२ ॥
व वेयसंवाध ॥ १३ ॥ यागनाय ॥ चक्रवदनजिनिनायनसुन्दरी ॥ १४ ॥

नमस्तुते १३

दक्षप्रवृत्तिप्रवृत्ति ॥ १५ ॥ दुम्भद्वीवायप्रवृत्तिमहामामकिद्वी ॥ १६ ॥ जगत्प्र
मादत्तमयनसुता ॥ १७ ॥ आगमवदपूजावर्षा ॥ १८ ॥ यागधर्मादिक्रा
गुप्तपद ॥ १९ ॥ पञ्चवृत्तस्वयंप्रवृत्ति ॥ २० ॥ सयययागीनीमामहय
वरुवरुवरु ॥ २१ ॥ सनगुप्तप्रवृत्तिप्रवृत्ति ॥ २२ ॥ रुनीयवायप्रवृत्ति ॥ २३ ॥
नास्वय ॥ २४ ॥ यागहयवा ॥ नमस्तुते ॥ २५ ॥ कायप्रवृत्ति ॥ २६ ॥ स्वयंविस्त
उत्तमयधय ॥ २७ ॥ भनाईईभनाईई ॥ २८ ॥ भनाभनाईई ॥ २९ ॥ इन्द्राश्र

किञ्च ॥ ११ ॥

लिंगाशयागधयू वज्रयधु मूलायागधयू ॥ धवत्तसुखीयनदरुध
यू सयदसुहाहियचन्द्रमयू ॥ मायादरुलीनडंगु ॥ साहियक
यू शासुत्वमद्रं ॥ १ ॥ नागा ॥ गमयमा ॥ ॥ किञ्च ॥ विविभिमतमा
अपि ति श्रानन्द मयू ति धया ॥ वज्रयधु साहि मूला लिंगाशसम्बानाना यज्जिमम
हाङ्गला ॥ ५ ॥ ननाई ई ननाई ई ई नना ननाई ई ई ई ॥ नीलवर्ण च
उवकुषति मखति नता पयमानन्द मयू ति धया ॥ विधवज्र मू ई चन्द्रज

किञ्च ॥ ११ ॥

रामकूटधया हाङ्गारुयशसु ॥ ॥ वज्रयधु गडचर्म मयू
खटा ए विमानन्द मयू ति धया ॥ कयति कया पयपयुपा ॥ किञ्च ॥ लवम
मिपधया वायुचर्म कटिवस्थिता ॥ ॥ दिर्गा विदिगांकपासादियम
ताकिनीदवी सहजानन्द मयू ति धया ॥ नमामि ॥ ॥ ॥ चक्र सम्बाना भगु
यू चयश मूपाधिता ॥ ॥ नागा ॥ गमयमा ॥ ॥ किञ्च ॥ उचक मखय नूव
॥ किञ्च ॥ नता ॥ मूकू टक भदिगांवया ॥ ५ ॥ ननाई ई ननाई ई ई नना ननाई ई

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं वज्रं नमः ॥ १३ ॥

ॐ ॥ वामकथाटकदहिनकनकि २ रुडाहृयसुखारिता ॥ ॥
सूर्यमधुलमप्यताधुवमयति २ वज्रमधिरुविहृषिता ॥ ॥ सतगुण
चयसिखगहधया २ वज्रवानाहिरुंरूपायसयश ॥ ॥ ॐ ॥ यागापंचम
॥ कलितवज्रानययविभभिदं चित्तावयि ॐ कपनादयूषी २ वज्रयु
गजिरुवनवीनापयिभयिजिनभभिदिंरूपं ॥ ॥ ॐ ॥ वज्रमानन्दम
यतिरूपमनेकाधधिपथीमंरुवज्रा २ ॐ श्रीं ह्रीं ॥ ॥ कलिकम

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं वज्रं नमः ॥ १४ ॥

लसंयागसहजापवननयंगस्थीनगति २ ठियमखषडुजयत्रमकूट
धयीरुहृणीनाननदहिनवाम ॥ ॥ ॐ ॥ इमधुलापविवडययैकास
नकंकमयशतनपडुलित २ वज्रखड्गसयदहिनकनधयीवामघा
त्यलचापधयी ॥ ॥ विचिरुयलमूरुयशरुषितसूययिअनम
यतिरूपं २ सतगुणचयशकमलपभादानमामिपयमानिनापदं ॥ ॥ ॐ ॥
॥ यागाताठि ॥ कालायिथथियावाताममनिलकनकाला २ यनकपि

सर्ववृद्ध ॥ ७८ ॥

विहायिवडयिकनृशक्रिययिनलाना ॥ ५२ ॥ मलयंडकधुनूवडयिठिठि
मातानहिवडयि ॥ ॥ तहिं ह्युखाऊनगम ॥ मयनपिवयिनयायि ॥
हायकालंनपुशाययि ॥ ॥ इन्द्रवडनययि ॥ ॥ चडसमकमुपि
सिद्धाकपूजलावनयायि ॥ ॥ मलयंडयिधनसणिंडलमहिं ह्युखाऊ
नयायि ॥ ॥ पयूनकूडकयमधुनूवडनययि ॥ ॥ नियंसुहृमं
गचडावयियातहिंडसुजापानयायि ॥ ॥ ५३ ॥ यागडावलि ॥ सर्व

वृद्धविवृद्धिमधुनाविष्णुमायकूदिता ॥ २४ ॥ मधुनाकालध्यासि
प्रिठिपाचना ॥ ५४ ॥ नमामिवाकूनीसिद्धियागिनीपतिगिनीगक्षमधुना
॥ २५ ॥ सुद्धिसर्वसिद्धियागिनीगक्षमधुना ॥ ॥ अदिनमधुलकड
सक्षमसदिपमायसुविम्वया ॥ २६ ॥ चकिवृद्धलकधिलत्तकमखलकु
षिता ॥ ॥ कयमिखल्यमायकूदनिमूकठकषादिगाम्वया ॥ २७ ॥
मायवधांगालाहडिक्कारुयंकया ॥ ५५ ॥ सुद्धवडिनिगवृद्धनकय

वि
१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०

सावधवापिता १ रुद्राय शसिप्रधियां अडाधुश क १५ मवशि
या १५ ॥ नागाग्रहंति ॥ हाहा हयभक्रियायिप्रसमनधयधिकं वा
रुपियव १५ रुद्रवायनयमधियां म १५ नमूक टक १५ गामना ॥
१५ ॥ यप्रभायसमयनायासमयसुदनीमायकाला १ रुमविनाहि
नीवेडवायहि १ रुमहिर १५ प्रभाया ॥ ॥ अत्रिहाय १५ वलं १ रु
मयनकपूर १५ वयिकं वा १५ नीलवर्धवडिप्र १५ मयम १५

वि
१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०

वली १५ ॥ ॥ अियं धडघट १५ रुद्रि १५ समयपयि १५ य १५ न्यरुद्राया १ रु
मविनाहिनीवटवायहि १ रुद्र १५ वनदधमिअक्षया ॥ ॥ गभवकिलिला
वड १५ तीयाड १५ रुद्रगयनयशम्रापा १५ समयाअनन्द १५ रुद्रि १५ गालम
१५ ॥ ॥ रुद्रसमयवड १५ वपाहि ॥ ॥ ॥ नागाकनदि ॥ ॥ रुद्र १५ वाययि १५ मीनी
१५ रुद्रकवदि १५ कमलकुलि १५ घ १५ कय १५ रुद्रिया १५ ॥ ॥ यागिनी १५ रुद्र
१५ वन १५ नडी १५ वयि १५ नायाम १५ रुद्र १५ वयि १५ रुद्रिया १५ कमल १५ सं १५ वयि ॥

विविधं वि॥ २१ ॥

कपड्यागिनीलपनजायि २ मशिकूलवाह्यात्रकमलसंघीवयि ॥ ४४ ॥
चयथायकंचियाय २ चन्द्रसूर्यइयिपकूनरुवाछा ॥ ४५ ॥ रुनयि एमठायि
हृदयुनवीना २ नययनपीमप्यउरुयनउवीया ॥ ४६ ॥ जागगश्रम
हेनवी ॥ विविहं विहूननमायविधमिवदन २ देवासूननयकुवनरु
कनूध ॥ ४७ ॥ नाचेननममिषीसुम्वनवीया २ वऊयागिनीपनियसुह
सुर्गगात्रा ॥ ४८ ॥ वऊवपाहासुलिंगानक ॥ ४९ ॥ रुठिभवपंधीयश्री

विक्रमं वि॥ २२ ॥

सुम्वनमधुल ॥ ५० ॥ एमकदहनविंदमानसुसुहृद २ कयशयशलाय
नवीयसंहाव ॥ ५१ ॥ द्वादधुऊधनियाचपिचउवदन २ नीलसंहा
वगगश्रमरुहीना ॥ ५२ ॥ जागगश्रम ॥ चकिक्कुलकधिलचकम
गुं ॥ चिकुलीयपूडनयमियमाला २ मिलचकिचकियारुसुविहृषित
गगधकनादिवंधूनीयाया ॥ ५३ ॥ प्रकुमसिहृयवममापूकपायायूण
नाथशीसुम्वनाया ॥ ५४ ॥ वऊकपाटकहाथधनियाक ॥ ५५ ॥ कियउख

वामदेव्य ॥ २३ ॥

कांग २ संपूठय गिनि कमय विहासिं एय म हासुख म दिपु साद ॥
वज्रवा ना ही मूले ग भ स म य ना च यिव क्रु वि वि रु य रुं गा २ व क्रु त्रिको य
यया कि ठु नि रु य व म रु व रु ल न स सं (ग) ॥ सरु रु सं रु रु य
म वं ति क र्म पा य धा रु य व च य म प सा द २ पु रु मू ले ग भ कि ठु नि रु य व वि
जा स यि भू न्य क य म ॥ १२ ॥ ना ग य रु नि ॥ वाम रा व स य ध य द हि न क य टि
२ पा य य नो पू य य द मा य सं रु द वी ॥ १३ ॥ द वी ना च यि न क उ टि व रु या

उप २ ॥ २४ ॥

गी नी २ रु नि न रु द वी डि रु व न प यि स ॥ काल मृ मू रु यि पा ष न व धि य २
जा ग द ष मा रु क य टि न रु दि य ॥ स्थ य स रु द वी नी चं रु न द वी २ रु
न्य पा रु द वी भू न्य स्वरु व ॥ रु नि सं रु य द वी क य म क द वी २ मा रु
मा र्ग द वी स वि रु रु न नी ॥ १४ ॥ य ग रु य वा ॥ उ यं २ व रु नि स य य स रु
स रु २ रु रु य २ रु रु सं रु य मी ॥ १५ ॥ रु म रु म रु रु रु रु क य ना च यि
म य नि वा य व २ रु म प यि य नी प द हा य रु रु नि रु रु नि रु रु य गि नी

त्रिभुवनकानि ॥ २५ ॥
साधन ॥ २६ ॥

॥ ऊयं१ हाडाहृजसः॥ ॥ १ कजटिकपात्रकजध्वनी॥ ॥ ऊयं१ योद
॥ ॥ १ गिवयुदनप्रभियमाला॥ ॥ ऊयं१ यावद्वसुधक्षजग
॥ ॥ १ पक्षममिम्रुदयसंवाक्यनि॥ ॥ १ नागाध्वलेयवी॥ ॥ १ छि
॥ ॥ १ नान्वयिवकुसुतप
॥ ॥ १ पक्षिसुसुदक्षसूर्यसुसुवर्गि॥ ॥ १ वरु
॥ ॥ १ नागरुयवि॥ ॥ १ हास्य

षष्ठमहवज्रचिरुप्रधर्मादयापयिहमिप्र२ कूठागममनाहयमक्षुल
 वज्रध्वजुहियकमलवप्र॥ ५॥ छरुवावजुलहृदयकमलवयवक
 प्र२मद्विसिद्धिविष्णुनाथनहायिमहामंडासिद्धिप्र॥ ॥ अगदिवद्व
 हियममध्वप्रमक्षुलविलायिषठचकप्र२ नीलनीलवर्धसुप्रंडि
 धामरुमनयायपयिमक्षुल॥ ॥ पसण्दिहृदहृदिहृयभिवद्वप्रष
 उरुप्रउगगउद्राप्र२ सजयवद्वजिनकूकययियानिउरुवहिय

अष्टक ५ पात्र ॥ २१ ॥

पवित्रामय ॥ गुणउपदशयिषामयिपंगप्रमाकचिरुविहागप्र
सकगुपूचयशसिप्रगातप्रप्रियाहूनयिस्सकवडकत्वय ॥ ६७ ॥
गागरेयवि ॥ अष्टकगुपायदिगंविदिगंरुवनधीसिप्रमायचरुयमाग
गगक्षसषयगागक्षयक्षमक्षकमागगक्षमययक्षवाडियाय ॥ ६८ ॥
रुंरुंनमामिपंचठाकिनीपंचरुगकिहूनठाकिनीअयक्षरुगारुलाक
॥ पूर्वउरुयपश्चिमदक्षिणचरुचुवनविघ्नमायविघ्नखडिया

अष्टक ५ पात्र ॥ २२ ॥

यंरुठाकिनीदिपिनीचउसिकंवाऊनायायवमायसंठाअवदन ॥ ६९ ॥
सिंधिनीवांघिनीउम्वकउयकिनीखदांगाययक्षअंरुअरुमाखडा
किनीयायवमायठाकिनीचक्षुअठाकिनीचरुयवदन ॥ ७० ॥
नयीदवीठाकिनीरुंरुपायअयक्षपंचमूडारुयक्षविठुषिताखरु
खटकवजयक्षखदांगायउययमयक्षनदवी ॥ ७१ ॥
चनणीमंरुकुमायाखअक्षकीयक्षसंकाअदहा ॥ ७२ ॥
यवणीमंरुयाय

५॥ अङ्गिना ॥ २६ ॥

[illegible][illegible]

विषय ॥ ३० ॥

ललिता ॥ विषय ॥ विनयवनसंयागाद्वल्लयिचद्रावयिनहि व म
२ दहयिडिनविं वृक्षभिमतयिसुत्रकवडमिनीपत्राहासमयम्याम
सयनं ॥ ५ ॥ नमामं रूपाघंकापचकं हवडसम्वयनिवधयूपं २ य
यिपद्रुमसंयागासंरुवनिध्वंसासहजमूनन्यमयहसनयूपं ॥ ॥
वडययकासनवंकुमयूशतनूनामसंगिनिश्रुकाख्यध्वनं २ उगमरु
श्वनाधनवाधिरुतदायकं यागाध ॥ प्रहवहायं ॥ गुप्रववि

विषय ॥ ३१ ॥

दृढधत्रीयाभ्रधपवनकं न्रियमभिमक् ॥ उडिधत्रीया २ चउचक्रपाठस
जीपपत्रमध्वत्रीसूर्यरुमभाप्रवापाहउवनं ॥ ॥ स्वप्नमायासदृशह
हावपनिहावनावृद्धधर्मसंघस्यश्रमागतियं २ गुप्रचयशसिप्रंगरुध्री
यागभवनिस्त्रनवडऊनमऊनमाप्रवृद्धस्यश्री ॥ ६ ॥ यागललिता ॥
हादृशहायनननृषिकिंऊभिपवासानाथितायवाजायरुपा २ हाउमायमा
रुनलकिमिनिडुंरुस्यतानपावनसिप्रमकियहावा ॥ ५ ॥ दृवीकंय

इति यकिमिनि कुं इ नायक सात्रिया २ दहिनि श्रुति दामा ह ध्रुव सि वि या
 ला डि नि न य न श्रु ति ग प वा ॥ ॥ मि य स स र क म धु ल मा ष्य व ध भि त हि
 ना पा श्रु गु थ ध्रु व सि न व क म्या २ क य ठि ख त्य ज ख द्वां क नृ क मां ज पं च
 भि न षू रं मू कू ट क ष क पा लं ॥ ॥ य च श्रु थ ग र द ह सि च उ द वी क यि
 (७) म ति ति वि ड या न नि ड यं २ ड ग र मा य ना भ न स य ज ड गु मा र ज हि स्य
 मा धि श्रु हि कू डु यं ॥ ७ ॥ ना ग रे य वि ॥ च (६) ग म भ न भि ति ष व

क्रावास्किनागमगडिर्कमया २ गकयभभनमूयकवृकाधूनिकमया
 कक्रकनागम ॥ ५२ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 दिगं वलिदवति २ मूयभभनमूयविषीयभनीनाचयिसरुडा
 नन्दय ॥ ॥ कंकप्रिधानावर्हिकमया क्रावाककाटिकनागम २
 कयंकहेनवावर्हिकमया सनसिङ्गनागम वृककवृका ॥ ॥ मूयकहा
 भभषपालनागम पचधुमयावर्हिकमहा २ लीश्वानाकयंक

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३३ ॥

वृक्षापूनिहमयामहापयनाग॥ ॥ धायभभभनपकतिवृक्षामू
नकनागमपूत्रमयाम॥ किलि॥ लावाभून्नवृक्षाकूलिकनागमवर्षस
मया॥ ॥ द्वादशरुजाद्वादशवदनाच्चडवभ्रवदनाद्वादशनयना
॥ रुनीयिकर्षपात्रारवद्रुभयभाकालिनातित्रियूपापयिमर्दना॥ ॥
नागभ्रंक्षरयवि॥ धूमांगभनिचक्षुकनानि॥ हीषमपिगालकभवयन
॥ ॥ ॥ उजयिप्रद्रंरुंरुद्रकनंकयश॥ नानाविहायपौडमहावलि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३४ ॥

पञ्चा॥ ॥ समयाय कुरु यागमन्त्रयदवा॥ वाङ्मयि वाङ्मय च उमाव
नयना॥ ॥ शिखय कजं कुरु यावति (॥ अ॥ २॥ पृष्टि कजं कसमाव
लवयन॥ ॥ मोदमहावति पृष्टव न गायन॥ मद्यमानमम कुरुधि
जम्भारुध॥ ६॥ नागमधूमत॥ पमादितादिदधुमिसुन्दरीपस
नमज्जमधुतसंस्त्रितलयना॥ २॥ दधधुतचउवदनधुरु (॥ अ॥ रिग
वजवाजाहि क (॥ अ॥ मूलिङ्गाक्ष॥ ६॥ ॥ कुरु कुरु हृदि हृष्टय (॥ अ॥ मज्जमय

तसंवाधियाय १ दंदाग्रलिंगनग्रद्वयसंस्कारवनाचयिदानस्थीच
 कसस्वत्रयाया ॥ कृत्तिभयभगडचर्मजिभूलाकर्हिठमयधर
 (आरिता १ मर्जपयिककपालखदंगपाथपयधुवमभियधया ॥
 ॥ पञ्चजिनवयमकूटग्रालंकृतषठमडाग्रारुयक्षविभुषिता १
 मूलिकातिद्रुपिग्रालिहचापयिवायुचर्मनिवाभनरुष्टुन ॥
 ॥ नयभिलमातातस्वधीसस्वनादिवचकृत्तिनिकयसहिदया १३

नऊनममायुंरूपायधयक्षगभवकिपत्रमादिवडगीता ॥ ६ ॥
 (६॥ क॥ नृधनांकर्मपर्यांभियभिकचटनशंवकंस्कंधमभुवडादि
 धगयासिपयिगतभिरवप्रभीर्षमातन्द्रमोली ॥ वायाक्षगष्टिष्टक (६॥
 नमिवनरुत्तागचर्मारुनीयः पायासासस्वभावमिद्रुवनविडयी
 ताकिनीचकुवर्हि ॥ ६ ॥ नागयडुगी ॥ दविनीसभावप्रविषाभयि
 कयि (६॥ इथरुनातामधुतनाया ॥ ६ ॥ रुठडंकायरुमयडगगतनिवसि

॥ ६ ॥
 ॥ ६ ॥
 ॥ ६ ॥

याथ ॥ सर्वताथागताऽं तं सर्वताथागतालयं ॥ सर्वमाणनेयाम्पदं
मधुलमरुमं ॥ १ ॥ श्रीमियशनीपंजनदल ॥ २ ॥ सहजसुन्दरीपायाजिनरु
प्रपयि ॥ ३ ॥ ॥ निधर्मगुं संरुं कं हननचर्याविल्लधकं ॥ समनरुदुका
यागं हाषमधुलमरुमं ॥ २ ॥ नवउयागिनी ॥ नलमलमल ॥ २ ॥ वज्रवा
नाहि श्रीलिंगशकालं ॥ ३ ॥ सर्वलक्ष्मसंपूर्णसर्वलक्ष्मवर्जितं ॥
समनरुदुवाचगुं हाषमधुलं सायथि ॥ ३ ॥ उथरु हवायाकपू

कवापि २३ यं जयं श्रीलिंगशनीलवर्धवाक् ॥ ३६ ॥ सर्वसत्त्वमहाचिरं
 अक्षं प्रकृतिनीर्मलं ॥ समरुद्रचिरुगं राघमधुलमरुमं ॥ ४ ॥
 नाग ॥ (७५) क ॥ संपूर्णं सर्वजगत्तमनपथपदं सर्वनयाशदिन ॥ कृत्वा
 सर्वविकल्पमाह कयश्रीगकिनीहृयूकानाजिना ॥ यः चक्रं पत्रिवरुणं
 जिनगुणहृनाद्वयमाकृदं ॥ यस्यात्तस्य कृपाशुभहृस्यमनसा नृत्वं
 यसंभयवरुण ॥ ७५ ॥ नागविहास ॥ ध्वज २३ ध्वजध्वजाध्वज २३ ध्वजध्वज

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वामादहिना ॥ २२ ॥

सुनक्षत्रवन्धितचत्रक्षत्रय २ कसुमवित्रपनदहधन ॥ हावविम
रुविस्पष्टगुप्तकृतायि २ नमः ४ नमः ४ नमः ४ वड्डुस्रगुप्तपयि ॥
७ ॥ वागमायसि ॥ वामादहिना नृपियिद्यनयी २ माप्यविनासयिमहासु
खकुल्लूया ॥ ८ ॥ कुंजयि ॥ कुंजयियासु रुजानन्द २ सुयत्रविनास
यि नृपयिरुव ॥ ९ ॥ गायनमयनचिरुविनासयिया २ कायवाकचिरु
नृककयिया ॥ १० ॥ नृकक्षवयि मारुल्लयिया २ गवयिप्रयानगमेक्ष

विमंजव ॥ २३ ॥

क्षयि ॥ पावयिप्रगुपूपायप्रसाद २ रुनयिवाग्बड्डुन्यसमाधि
॥ ११ ॥ वागमायव ॥ निजुवम्रडाधडाहृववनाया २ श्रीरुतगम
नयागिनीपयिस ॥ १२ ॥ नृनन्दादिदवाहृविमृनन्दादिदवा २ प
विनाचकिरुवमनसासंपूर ॥ १३ ॥ पूरुसिरुहिमृनृनिजुव
लरुव २ शवविमृनरुपिवयिसन्नाका ॥ १४ ॥ श्रीरुतडादियानक
लयिचधुवि २ गीरुमृनरुकिप्रवयिवाउनक ॥ १५ ॥ मृल्लिकाहिरुयि

क्रि
५
२
५
२

पादध्वजं १२ चडयागिनीमंगलगीतं ॥ पयिस्त्रयिद्वंविनीमूदय
संध्या १२ कीठनिकमलकृत्तिषवजहृदि ॥ ॥ यश्मत्रिधात्रिचोत्रि
वतापी १२ लपनचडसमरुपूववाता ॥ ५२ ॥ नागानट ॥ कवनयूपला
कथयकवनयूपवृक्षं १२ अखयनियंजनस्ययविष्टुद्धि ॥ ५३ ॥ नाच
यिम्नूडाधूडाकानकमान १२ खडांगठमयूगीदिनयभियमाता ॥
अंकुलस्यनियंजनअंकुलविहना १२ अनरुपधयपतिस्ययविष्टुद्धि ॥

आहितवकु २ प्रभृति लंकिताय क्षी ॥ धृ ॥ नवजदवीचकी कधुलकच्छि
 चकमखलनोपयमक्षी २ मायनप्रथिप्रक ॥ धधविहयसुजकलक्षि
 कुवनध्वनीवजयागिनी ॥ ॥ दहिनकयतिवामकपाहा २ दिगम्बयमकुट
 सुकणी ॥ ॥ डिदलकमलापविभव २ उपनिवादमकेनस्थिता ॥ ॥
 पुनममिषावेनाचनप्य २ डिनिनयनकृत्तिखदां ॥ ॥ रुनयिपूप्स
 रुजानन्द २ वजवानासुरूपमपायान् ॥ ॥ ॥ यागनाटनयावनीदा ॥

डिदलसुपात्ररुदिनकयमकुलजाडिरुक्तिकुवनकुननी २ प्रक्तकनव
 प्रडिनिनयनमायचकुयक्षी ॥ धृ ॥ दवीकयतिकपायध्वरुषिय
 नयविजमाहा २ कमलकुलिषयितायवाडयिनाचयिसुरुजखज
 पिनी ॥ ॥ चकीभिलक ॥ कधुलक ॥ कछिस् ॥ ॥ हा २ हा ॥ थयूचकक
 टियमखलचय ॥ क्षनोपयरुषिनी ॥ ॥ रुवयलयानलतकुधयियादा
 रुभूहनकलापा २ हावाहावविवर्तिनभूतपमभूतलुयगागाक्षखज

डिदलसुपात्ररुदिनकयमकुलजाडिरुक्तिकुवनकुननी २ प्रक्तकनव
 प्रडिनिनयनमायचकुयक्षी ॥ धृ ॥ दवीकयतिकपायध्वरुषिय
 नयविजमाहा २ कमलकुलिषयितायवाडयिनाचयिसुरुजखज
 पिनी ॥ ॥ चकीभिलक ॥ कधुलक ॥ कछिस् ॥ ॥ हा २ हा ॥ थयूचकक
 टियमखलचय ॥ क्षनोपयरुषिनी ॥ ॥ रुवयलयानलतकुधयियादा
 रुभूहनकलापा २ हावाहावविवर्तिनभूतपमभूतलुयगागाक्षखज

विष्णुसहस्रनाम ॥ ५३ ॥

पीडि ॥ ॥ पञ्चमवक्त्रपदविप्रगतध्वजियगभवन्निहाकूलिष्ठा ॥ २ ॥ अनरु
प्रसिद्धिमाकृष्यदापक्षमामिषीवक्त्रयागिनी ॥ ६२ ॥ नागरासु ॥ विदलक
मलवर्षकसुमसंगमध्वकयहूवलीना ॥ २ ॥ विप्रपाकृखगामखदवीमद
नपातवापिता ॥ ६३ ॥ नमामि ॥ नात्मा विष्णुवनमातावकूलदवीशीमृ
गसूही ॥ २ ॥ समप्रसूतासूत्रवन्दितचय ॥ १ ॥ अनगामद्विसिद्धिवप्रसादा
॥ ॥ नन्दनवनमिवचन्दनकयूव ॥ १ ॥ अनगकसुमपल्लिताकवनशूनि

विष्णुसहस्रनाम ॥ ५४ ॥

स्यंगंगमहानवागमतितीर्थ ॥ १ ॥ अनगतीर्थकृत्वन ॥ ॥ अहरेवव ॥ अह
यागिनीदवी ॥ १ ॥ अनगदवासूत्रकृत्पात्र ॥ १ ॥ अहमसहस्रयद्वीकनीयवायू
व ॥ १ ॥ अनगविष्णुनिप्रवायूव ॥ ॥ विष्णुव्यापिततायूशीदवी ॥ १ ॥ अहवयनिप्र
ऊनऊकिमय ॥ १ ॥ अहिमकसुखरुलदायनीदवी ॥ १ ॥ ऊनऊनमकुंरूपायका
यका ॥ ६४ ॥ नागकनदि ॥ ॥ अहवक्त्रनेनात्मादवी ॥ १ ॥ विष्णुवननाथ ॥ १ ॥ पंचवि
नव्यापितापंचवर्षदहा ॥ ६५ ॥ नमामि ॥ १ ॥ अहपूरुषगुर्वेया ॥ १ ॥ अहयूक

क्रमशः प्रकृत ॥ ५८ ॥

शीगुच्छध्वनीवज्रयागिनीभूष्यता ॥ पूर्वदिगास्थितरुच्यवनीलवर्ण ॥ २५ ॥ हि
नपण्डुध्वनीवामविंशध्वना ॥ २६ ॥ यस्मिन्निचोत्रियागिनीयवी ॥ गमवर्गिलिला
वज्रं कायसं वजा ॥ २७ ॥ यागकनदि ॥ क्रमशः प्रकृतध्वनीतिदत्तसंजा
त ॥ २८ ॥ कपसंरुवयन्तवर्धयहा ॥ २९ ॥ नमामि ॥ शानेनात्मायवी ॥ ३० ॥ उ
वनवापिकजमनउद्गात्रीया ॥ ३१ ॥ दहिनकयतिध्वनीवामखडांगायमा
२चक्रिकृष्णलकधिगीवपूज्यमाहा ॥ ३२ ॥ दहिभरुच्यवयववामवासुकि

त्रैलोक्यसंरुच ॥ ५९ ॥

२सर्वदवयवीगानपूजिता ॥ ३३ ॥ वाहिप्रवरुचायविसम्बय ॥ नानावृक्षनाना
वागमतितीप्र ॥ ३४ ॥ रुनयिमनिच्यवजागीतचयन ॥ ३५ ॥ नमऊनममाद्रूपद
वनयवीयसाय ॥ ३६ ॥ नागकामा ॥ न्वीऊसन्तवकृष्णवर्धयहा ॥ ३७ ॥
त्रिंशतलकृष्णध्वना ॥ ३८ ॥ वामशुऊखत्यप्रखडांगायदहिनकयतिध्वना ॥ ३९ ॥
नमामि ॥ शानेनात्मायवी ॥ ४० ॥ माप्ररुवरुयस्यक्षी ॥ ४१ ॥ चक्रविंशतिपिथेय
पूयंचकवनहिभउध्वर्य ॥ ४२ ॥ पंचमद्राहृषितमंगुणिवनप्रभिलमशुमाहा ॥ ४३ ॥

ॐ नमो भगवते ॥ ३० ॥

[illegible]

काठिया ॥ ३९ ॥

चर्मवस्त्रपद्मनिष्क २ घर्वलंवादनभावाकाका ॥ ॥ चयक्षभयक्षणीडर्ग
तायूक्षीमाता २ हनयिभूमाघवडगीतचनिता ॥ ६ ॥ जागविहस ॥ कटि
जकचक्षदवीपूडमालाछद २ सरुऊभ्रानन्दवाळुलीदवी ॥ ७ ॥ जकाः
लिशिरुवनवभ्रस्यरुभ्रजकालि २ सयाप्रविबभ्रस्यरुभ्रजकालि ॥ ८ ॥
रुभ्रवाळुलिदवीनानपूष २ जकपादभात्रिगायक्षप्रयिया ॥ ९ ॥ रुभ्रवा
ळुलिदवीऊगानडधमक्षी २ भाऊरुतायणीरुचूवलयिया ॥ १० ॥ यानिउ

अवधिनिरुक्तमज्ञान
३४

वस्त्राब्जचक्रमणिश्चापविष्णुशक्तिभक्त्युत्पत्तिः ॥ विविधियत्न
मोत्रिलंकृतदहाश्चगताविवांश्चिन्तयन्तुलदायकं ॥ ६७ ॥ नागकाभा
७ ॥ अवननिनिहितवामजानरवक्रकीयक्षमापसंज्ञासाश्चागदधमाहु
वन्धिपपाञ्चकिन्तुवनयायाअचयवीना ॥ ६८ ॥ नमामिथीचधुमरुपा
घनाङ्गामृग्युत्पत्तिदिताश्चिन्तयन्तुलदायकं ॥ विष्णुनाथविष्णुवापितविजविक्रमम
हकाधयाया ॥ अतिहीघनादुर्द्धयचधुमंङ्काकनायाविष्णुकी

अवधिसिद्धिः ३५

जक्ष्मपीठितमृधनाककयक्षयनावेप्रिसुतासायावक्रुधयक्ष्म ॥ ६९ ॥
माधवमायापूजन्दयवस्त्रापोदपिष्ठाचापाठरुजक्ष्मश्चसमयसमाया
नागविभाहाह्ननायसमहितदहा ॥ ७० ॥ जलारुजक्ष्मपङ्कलिकमोली
कयूनोपूजयूक्षीमूर्धकानाश्चसूजन्तनागवन्तिकचयक्ष्मनायसम
ध्वजमृचलवीना ॥ ७१ ॥ नागवसक्त ॥ अरुसिक्कसमद्युक्तिदहापु
खनाश्चिविधियत्नमक्षिमकूटविरुषिका ॥ ७२ ॥ नाचयथीमृचलवी

इंद्रियसंरुच ३३

नाशनाचयानन्दविलासयिञ्चला ॥ ॥ दाम्भुहवविंशमूडादधमा
२पहस्रमूलिगशम्रदयमहस्रहं ॥ ॥ विप्रागचन्द्रमृतिरुवरुयंक
नाशस्यनिरुतखङ्गनर्तनीपाशा ॥ ॥ मालचनुयदर्पनिषीलावपु
रुनाशविषाभियुगानतगागशविप्रासयिञ्चला ॥ ६ ॥ यागाकामा
७ ॥ ईवीउसंरुवषसमदहा२नवयसदाविंशकलेकृशधना२ददध
उजाधउवदनादादधवर्तुलपकनठं ॥ ७ ॥ नमामिषीविचकस्रना

उर्ध्वनक्त ३७

मात्ररुपरुवरुयरुयक्षी ॥ ॥ चतुर्विंशमिपि ॥ ७ ॥ याकृतिविंशदी
पश्चात् २चतुचकपविचतादवीसंपूठपडलितहिता ॥ ॥ पहसं
पूठमूलिकल्लिपदाकाकाशमिस्रचना२दादधदवी२कुरुवानम
मिषीचकस्रना ॥ ॥ अरुगुचचप ॥ ८ ॥ सिप्रधायरुनयिगीरुणावक
कूलिषा२दानपक्षिप्रमनाहर्षस्रमधुलमृपाधिता ॥ ९ ॥ यागायानक
वि ॥ उर्ध्वनक्तनठुपिंगलकषा२नाचयिरुयवउनमलिरुथा ॥ १० ॥

वक्रिधारा ॥ ३८ ॥

हृत्पुत्रदमायकाला ॥ ३८ ॥ अतिचक्षुःश्रुतिस्तुतुयुक्ता ॥ ॥ वामद्विविद
हिमचक्षुःश्रुति ॥ ३८ ॥ अतिचक्षुःश्रुतिस्तुतुयुक्ता ॥ ॥ दहिनेनमपुत्रवामरवद्वि
गा ॥ ३८ ॥ अतिचक्षुःश्रुतिस्तुतुयुक्ता ॥ ॥ ३८ ॥ नागमपुत्र ॥ वक्रिधारा ॥ ३८ ॥
चक्षुःश्रुति ॥ ३८ ॥ अतिचक्षुःश्रुतिस्तुतुयुक्ता ॥ ॥ ३८ ॥ नमोऽस्ति ॥ ३८ ॥
वक्रिधारा ॥ ३८ ॥ अतिचक्षुःश्रुतिस्तुतुयुक्ता ॥ ॥ ३८ ॥ पूर्वतुल्यय ॥ ३८ ॥
श्रिमदक्षिणदिगाद्वी ॥ ३८ ॥ अतिचक्षुःश्रुतिस्तुतुयुक्ता ॥ ॥ ३८ ॥ चक्षुः

वक्रिधारा ॥ ३८ ॥

मायदिगांशु ॥ ३८ ॥ अतिचक्षुःश्रुतिस्तुतुयुक्ता ॥ ॥ ३८ ॥ रुद्रिहृत्पुत्र
॥ ३८ ॥ अतिचक्षुःश्रुतिस्तुतुयुक्ता ॥ ॥ ३८ ॥ नागवसन् ॥ ३८ ॥
वक्रिधारा ॥ ३८ ॥ अतिचक्षुःश्रुतिस्तुतुयुक्ता ॥ ॥ ३८ ॥ नीयस्
हृत्पुत्र ॥ ३८ ॥ अतिचक्षुःश्रुतिस्तुतुयुक्ता ॥ ॥ ३८ ॥ नायिसें
गस्यपुत्रीमयन ॥ ३८ ॥ अतिचक्षुःश्रुतिस्तुतुयुक्ता ॥ ॥ ३८ ॥
मायविमूखना ॥ ३८ ॥ अतिचक्षुःश्रुतिस्तुतुयुक्ता ॥ ॥ ३८ ॥ दहृदिहृत्पुत्र

नञीयागमन्त्राश्चक्षमाभिस्तनश्चलीमूलिङ्गक्ष॥ ६२ ॥ नागकनदि॥ निर्म
लगयनदुष्महितमूलनश्चिम्भुडिनायनसमयसुख॥ ६३ ॥ हावयि
पञ्चयागमवज्रीनाश्चगिनीजपकपूषनाचयि॥ ६४ ॥ ताकिनीमधुलच
करुणयियाश्चमधुलकाक्षपूकपयिया॥ ६५ ॥ वज्रीयावीवतावीनृक्ष
श्चिंघिनीध्यांघिनीजंक्कडलूकिनी॥ ६६ ॥ ताकिनीद्विपिनीचड
ऊनीश्चस्यप्रसमयहयवंधनभाचयि॥ ६७ ॥ नागनिवृद्ध॥ मूखया

यं जनकं दयः प्रपन्नं मया गच्छकं मल्लं साधना ॥ २ ॥ न्यक्तं विना सिद्धं वा यथा चिन्तितं
 वीर्याशक्तिं समुत्पन्नं ॥ ३ ॥ नमामि निनालं हनीयकं नृणां हनुं
 संशयिता ॥ ४ ॥ स्यदचन्द्रसमं तदुपकाशितं तदुत्तमं चन्द्रसमं व्यापितं ॥
 षष्ठं गायत्र्या साधितं च कुर्वन्ति मया सधुत्तमं तदुत्तमं ॥ ५ ॥ निर्मलं हृदयं च
 कृष्णं पिबन्ति अहिनि सिद्धं तदुत्तमं साधना ॥ ६ ॥ आनन्दं प्रपन्नं नन्दं विप्रमा
 सत्तु चतुर्नानन्दं समुत्तमं ॥ ७ ॥ प्रपन्नं विप्रमा मया नन्दं यदि मया सुखं सु

मध्विपुत्र ॥ १२ ॥

गरुसम्पदवप्रपायिता ॥ हुवज्जकालचकुलीचकुसम्पन्नमननकाटि
सिद्धापात्रंगता ॥ शाकुरुतादियानपूर्यगिप्रिजाप्रंधप्रपुत्रु महासुखजा
नमं ॥ ७२ ॥ नागवसंतमधूमन ॥ मध्विपुत्रिपूत्राद्रयनिद्रुयाया ॥ सुकप्र
दवगानवन्दिरुपादं ॥ ७३ ॥ मेठीमूदिबद्धधीमंरूकूमाया ॥ सुवमूहिवंदि
तपमनमूध्वना ॥ ७४ ॥ कंकूमयूचिनायासुचिचिप्रविषमा ॥ सुवमूहिवंदि
मिनाकनूध्विहना ॥ ७५ ॥ विषयविषमाकूतपात्रंगमनसु ॥ विष्वविषा

नमामि ॥ ७३ ॥

पितृषिवगुयूखयंरु ॥ सुगुयूयप्रमादिविंदुमूपाध्व ॥ गमवन्निगव
गीकपुनवकूलिभा ॥ ७६ ॥ नागहेयवि ॥ नमामि ॥ जिनध्वरुकप्रंदकचरु
प्रमत्रुनिमूलिगिता ॥ यध्वरुनयध्वरुखयूपावद्धधर्ममूययध्वरा
॥ ७७ ॥ ननाइइइ ॥ इगनसंसात्रउध्वययामनारुनमाम्मु ॥ पंचजिनध्व
ना ॥ ७८ ॥ ननाइइइ ॥ नमामि ॥ निपूयध्वयध्विसिद्धिवयदायनी ॥ इ
पितरुनक्षसर्वपापकूयंकनदानपूध्व ॥ इमाकूपदं ॥ ७९ ॥ ननाइइइ ॥

एकवर्ग ॥ १४ ॥

नमामि श्वर्मधुवागीश्वर्यषाठ्ठश्रवायपविमहिता १ षाठ्ठशमप्रक्षयूर्ध्वं
 शंकाया सर्वदवपविमहिता ॥ ॥ नमः ॥ १ नमामि श्वर्वागीश्वर्यमधुलप
 मगिप्रिनिवासिता २ सुखाहिमाहित ३ खविनाशनपक्षमामिडिनचक ४
 या ॥ ५ ॥ नमामि ॥ १ कवदनयलमकूटमालंकरता २ चक्रुक्रुक्रुख
 प्रयष्टकसयधनधारी ॥ ३ ॥ नमामि मं ४ शीप्यनृष्यश्वरा २ सययन
 सायपिप्रितुडधना ॥ ५ ॥ नमामि ॥ गक्षयतिवासणीमहाकाया २ सगक्ष

श्रीभक्तगो १५ ॥

[illegible]

पञ्चमः ॥ १३ ॥

अङ्गगन्तीपञ्जननाह २ सर्वभामु विष्णुपदपदितनीपञ्जन ॥ ६२ ॥ पागाधनाथी
॥ गङ्गमुखविनयनगङ्गुवपदन्तुप्राधिपतिगङ्गाधना २ मक्षिमकात्रलारुप
क्षान्नक्षिकित्तक्षसंकासिना ॥ ६३ ॥ नायिपविष्णुमात्रियादपमत्रिया ३ ४
खविनाथनं ॥ मत्रियामात्रामात्रसंकाभामत्रवपम ३ ४ खविनाथिना ॥ ॥
पञ्चवाक्षीकृष्णवज्रहृदिपुत्रदहिनकना २ मत्रधनखदां ॥ गख
त्यक्तपतिवाम ॥ ॥ विचित्रवस्तुकंचकटिध्वज्जटायूकमक्षिमक्षि

पञ्चकपात्र ॥ ११ ॥

ना २ लम्बादत्रनधृत्तलम्बादत्र ॥ अहापायत्रमित्रिमित्रिवज्रन ॥ ॥ पत्न
तत्रधृत्तलम्बादत्रलिताम्रविकमूखम्रविकिसन्दना २ दिनात्रदत्तारुममूख
दातात्रमाम्मु २ गङ्गाधियति ॥ ६४ ॥ नागाधि ॥ पञ्चकपात्राध्वलिभमोली
पञ्चहसनपञ्चमूडात्रुप २ नत्रभिप्रमात्राणीव ॥ अहावापुत्रमर्कटिरुधि
तत्रयना ॥ ६५ ॥ ॥ ॥ कायसजातवदनारवर्तलम्बादत्रनीलसमदहा
क्राध्वधियप्रथीमहाकात्रा २ पञ्चामृत्तत्रसदपहृन्त्रियाहायनवम्रकपा

५७३

ॐ काय संज्ञा ॥ १८॥

प्रधना ॥ प्रकृष्टा लङ्गिनिनयनाद्याय ह्यंकयही घमवदना २३ द्रपद
लितापिंगलकभाङ्गमरुहसांकयश्रमय ॥ ॥ कयनिकयायाध्वप्रिशव
दंगमनागम्राह्यकभाकुधुप्रहाया २ नागसिप्रसूतोपयनागमम्राह्यनाग
म्राह्यप्रसूत ॥ ॥ दिनवयमोत्रीध्वप्रिशमतावद्वयसुनस्यप्र
कृकवीना २५ ताप्रहाताधुवहावासाध्वकूलिसाश्रनरुप्रयप्रक्ष ॥
६५ ॥ नागध्वता ॥ कृकायसंजामनीलवर्धयवन्दनसुवीया २५ कृ

सुखदकि (शतयतिनिभं पि एमद्रकम् ॥ ५॥ नमो निधायकं काय
मयति सययप्रियविनाशनं २३॥ कविता सुविघ्नचरुमपि विध्वंश
नं ॥ ॥ दहिनकयवज्जलहीरुखज्जचकधप्रिता १॥ वामघटनरु
निपाथखडांगमयूधधप्रिता ॥ ॥ कश्चिक्कुलकयूजलचकरुगारु
प्रशविहृषिता २॥ सुमातावायुजिनालकृतदंष्ट्राकनालवदनं ॥
पुष्पतिरुगचयगविष्टविषयहृदिविकाना २॥ वज्रसुखपसादाय

नैऋतवर्ष ॥ १२ ॥

कंसद्रिसिद्धिपसादा ॥ ७ ॥ नागगंधर्ववि ॥ प्रकृतवर्षकमखद्वि
ऊनकृतवर्षलनरुं २ दहिमकुऊगठाहसुमहावीपवरा ॥ ४ ॥ नममिषीहिम
सनपप्रमथ्य २ वामकुऊअरुयमद्रापगालीभा ॥ ५ ॥ ऊगकसंसाप्रता
रुहलपसादसिद्धितं २ ऊगकमनावंरुं ३ सिद्धिरुलदहिम ॥ ६ ॥
पंचपाशुवसहितइर्यकिसुन्दरीदवी २ अर्थलारुयक्षलारुसुमयसु
मंगलं ॥ ७ ॥ सुरुगुचयक्षपसादसिद्धिम २ लावाहावचयक्षणीही

जिनवपतय ॥ १० ॥

मजाऊंनममि ॥ १ ॥ पप्रमाप्रगिस्थितवऊपरुवाचार्य २ अमृतप
रुदवविप्रचित्ताहिमगीत ॥ २ ॥ नागप्रामकपि ॥ जिनवपतनयनि
कुवनशीकांथामयनिवाथसिद्धिनवप्रमनिना २ नपातमधुलमाम्य
अभिरुतकीप्रलऊगकनाथअरुयदाता ॥ ३ ॥ शियागभक्तिवन्धियाप्र
वतादवपक्षामिबूगमल्लताकष्यपदवं २ सिद्धयागीवंधूदरुपवि
कुमनायाकुवंपतिचूडामक्षिनप्रदुदवं ॥ ४ ॥ नाडिकमल्लविकासि

ॐ कर्मसुख ॥ ८७ ॥

नवाधियाप्रवासकमलहाथ २ रुक्मसुमननयागाकसुदुप्रिउरुष
रुयरुयस ॥ १ ॥ ॐ ॐ ॐ रुगविकिकायरुक्तिनममिषीवृगमलहाक
ध्वयदवा २ नमामि २ शानप्रनुदवास्वगमिध्वपाकाप्रदवा ॥ २ ॥ ॐ
रुमिदकिंभलरुगध्वपा २ नृगतचयस २ शीमृत्तारुवभित्यंगतध
प्रियाणीलाकध्वयसप्रभागति ॥ ३ ॥ ॐ ॥ नागविहास ॥ १ ॥ कर्मसुखकनक
वर्धद्वितियरुक्त २ रुमगिप्रिषीगल्लिहासनहासक ॥ ४ ॥ ॐ ॥ ममिषी

ॐ कर्मसुख ॥ ८८ ॥

यागिनिष्ठकामनिदवी २ नवप्रत्ननरुदयाकृतल्लारुवक ॥ १ ॥ ॐ ॥ दहिन
कयसर्वप्रतिवित्त्वध्वन २ वामयूर्ध्वघटध्वयसभक्तकृत ॥ २ ॥ ॐ
सिंहल्लिषयातायूलाकमृतिरुक्त २ ॐ ॥ दियामृतीनीनयनप्रवक
॥ ३ ॥ ॐ ॥ ममहिनीदवीसजनयवंदिन २ सुकलमद्विसिद्धिस्थितपदक
॥ ४ ॥ ॐ ॥ नागांधारुवरी ॥ १ ॥ ॐ ॥ कर्मसुखल्लवध्वननृगं २ नानायल्लारु
प्रसमकूटक ॥ ५ ॥ ॐ ॥ नमामिषीहाप्रतियरुक्त ॥ ६ ॥ ॐ ॥ रुद्रवनव्यापि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २३ ॥

नजिनसुनदायनी ॥ ॥ दहिनकुजमूरुयदायनिदवी ॥ वामकुजवाप्रकूमा
यी मूलिगंशस्थित ॥ ॥ पञ्चशतपूजयप्रिवाजउद्धाप्रिशी ॥ रुगतमप
जनसुतउद्धाप्रिशीमाता ॥ ॥ श्रीहृत्पतिदवीपूजापूथमनाहृष ॥ सुक
प्रमिद्धिमाकुरुलपुदाता ॥ ॐ ॥ पागामल्ल ॥ अभियाकिप्रक्षडितिल
लितसुन ॥ किप्रतिप्रलपंडितसु ॥ ॐ ॥ नमामि श्रीवसंधाप्रोद
वाजिनजननी ॥ चिन्तितमनसाप्रलधारी ॥ ॥ रुद्रकलभवामकन

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २४ ॥

धारी ॥ श्वानामंजलिपुसपूकधारी ॥ ॥ लाकवधप्रवजपाणि ॥ ला
दवी ॥ रुद्रमूरुयवपूशमधुलयका ॥ ॥ निधिदभनप्रलमंजुप्रि ॥ गुपू
वप ॥ ॐ ॥ पागामल्ल ॥ अभ्यानिप्रंजनपयमरुधुन
मायासंहावदा ॥ हावयिसंहावदानाभिप्रयिकांय ॥ ॥ नउरुव
नउनिवाक्षकहि ॥ रुद्रमामहासुहवज ॥ याहावमनहिरावन ॥ स्वयं
प्रसहायिकर्ज ॥ ॥ अश्वपूमनुविवज्यानासाविंजुनचिंरु ॥ रुद्र

इंद्रकायसंज्ञा ॥ ८५ ॥
जावति ॥

सापप्रममहासहानाहदिप्रभचिरा ॥ ॥ जिमपत्रिविंद्रसंहावदा
निमिरावमनरावयि २ शुन्यनिप्रंडनपयमपुननामयिपूयनपाउं ॥
॥ जिमऊलमामचन्द्रसहिनखरुनिमिरु २ निनिमामधुतचकज
ननयसहावखरु ॥ ७ ॥ मागडावयि ॥ इंकायसंज्ञाकथुकदहा २
धिरुऊनकाएडिनं ॥ ८ ॥ ननाइइंननाइइं २ ननामगइइं २
॥ चकीकधुलकभिसरु २ लाचककयूयवमसुग ॥ ॥ मय

सिंहकादिभमभान ॥ ८६ ॥

तनोपनपायय २ घाघप्रहसवाप्यचर्म ॥ ॥ ऊटामकूटविश्ववज
२ शुकमधुमईचन्द्रचकं ॥ ॥ सव्यकयवऊवमिध १ २ रेयवका
लीमूतिरुपदं ॥ ॥ धंऊय ॥ ॥ ऊयंशुधिरुऊसम्वयतीकुवन
यापिता २ मद्रिसिद्धिमहामडासिद्धि ॥ ७ ॥ मागहयवि ॥ सिंह
दिभमभानवाधिरुऊनकनागमकयूरावा २ चन्द्रागभमभानमी
लसरुकावासकिनागभाऊकिमया ॥ ८ ॥ नऊनागावाऊनागायूति

शीवासित हस्तिमसिकिप्रसंगं शहालम्भमानमूषकवृक्षातृकनागभयूनि
 तृजयदा ॥ कंकप्रियायावरुनममयाहालांकूलालकक्षरुटनागभयूकयं
 ऊरेयवावरुनममयामहापयनागभयूकवृक्षा ॥ अठुरुहासां
 खपालनागभयूचन्द्रमयावरुमहित्रहा ॥ लक्ष्मीवानंकिप्रंजयवृक्षाप
 मनागभयूक्षितमया ॥ धात्रमंभानपह्लिवृक्षाभूनकनागभयू
 यनमया ॥ किप्रिकिनावाभयूशवृक्षाकूलिकनागभयूवर्षनमया ॥ ७ ॥

रुद्राभिज ॥ ८ ॥
 मायाजाते ॥ ८ ॥

नागगंधारेयवि ॥ ह्यभिजमकूटकिप्रकिमसिरुष्यप्रचप्रशङ्ग ॥ ६ ॥
 साहियवजसुत्वप्रमभ्यपयमपदं ॥ गर्भरुनिवद्रूपीथष्टदह
 धय ॥ वापीरुहलनसंचाप्रिगुगुसकषकमलङ्ग ॥ ७ ॥
 नागदभय ॥ मायाजालविम्बसुदृष्यभ्रीना ॥ भाहमानदप्यकुदिप्र
 निप्रभ्रासा ॥ ८ ॥ नसंसायभ्रासा ॥ नागादभमाहकुदिप्रनिप्रभ्रासा
 ॥ भूनमिखनयनदृकत्रुचिय ॥ उनमनीचिकद्रुष्टुपूय ॥

पूर्वदिगां स्थिता ॥ २० ॥

सहस्रसंज्ञावनयडदनागतध्रियया २० स्वपत्रमवा सत्रलब्ध ॥ अथाथ
३॥ उदयचन्द्रपायपसादा २० गभवनिनिद्रश्रवपापरुवचक्रगत्रिध ॥ ३
॥ नागकाभा ॥ पूर्वदिगां स्थिता गोत्रीयदीपंकायसंज्ञाता नीलवर्णहा २०
क्रिष्णदिगां स्थिता चोत्रीयदीपंकायसंज्ञाता स्यामवर्णहा ॥ ४ ॥ हवर्जने
नात्मादीपंकायसंज्ञाता विदिगां स्थिता स्यामवर्णहा ॥ ५ ॥ पश्चि
मदिगां स्थिता वहालीदीपंकायसंज्ञाता पीतवर्णहा ॥ ६ ॥ उरुयदिगां स्थिता प

स्मृतीदीपंकायसंज्ञाता पङ्कवर्णहा ॥ ७ ॥ अग्निदिगां स्थिता सवनीदीपंकायसंज्ञाता
कायसंज्ञाता खरुवर्णहा २० नेत्राग्निदिगां स्थिता चण्डीदीपंकायसंज्ञाता
कृष्णवर्णहा ॥ ८ ॥ वायुदिगां स्थिता उर्वीदीपंकायसंज्ञाता कर्प
यवर्णहा २० आनीदिगां स्थिता पृष्णदीपंकायसंज्ञाता स्यामवर्णहा ॥
२॥ सुलवापीनामवनान्तप्रस्थिता वरुमलमध्वस्यं संज्ञाता २० अग्निक्
लिभाचार्यादिउर्वीदीपंकायसंज्ञाता खरुवर्णहा ॥ ९ ॥ नागका